National Gay and Lesbian
Task Force
www.theTaskForce.org

Press Release

मीडिया संपर्कः
रॉबर्टा स्कलर, संचार निदेशक
917.704.6358 (सेल), 646.358.1465 (कार्यालय)
rsklar@theTaskForce.org

एशियाई एवं प्रशांत द्वीपीय लेस्बियन, समलैंगिक, द्विलिंगी एवं ट्रांसजेंडर अमेरिकियों पर अब तक के सबसे बड़े राष्ट्रीय सर्वेक्षण के जारी करने के साथ नेशनल गे एंड लेस्बियन टास्क फोर्स एशिया प्रशांत विरासत माह मना रहा है

अध्ययन ने भेदभाव और उत्पीड़न की चिंतनीय हद तक उच्च दरों को उजागर किया है

घृणा हिंसा एवं उत्पीड़न, मीडिया प्रतिनिधित्व, वैवाहिक समता और आप्रवास हैं समुदाय के समक्ष उपस्थित सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुद्दे

रिपोर्ट एवं संबंधित फैक्टशीट डाउनलोड करें
www.theTaskForce.org/reports_and_research/api_study से

"जब घृणा हिंसा और उत्पीड़न को समुदाय की सबसे बड़ी चिंता बताया जाए, और एशियाई या प्रशांत द्वीपीय होने या लेस्बियन, समलैंगिक, द्विलिंगी या ट्रांसजेंडर होने के चलते सर्वेक्षण के पांच में से करीब एक उत्तरदाता को शारीरिक उत्पीड़न से गुजरना पड़ा हो, यह इस आवश्यकता को रेखांकित करता है कि कांग्रेस संघीय हिंसा अपराध कानून पारित करे और राष्ट्रपति उस पर हस्ताक्षर करें।"
— **मैट फोरमैन, कार्यकारी निदेशक, नेशनल गे एंड लेस्बियन टास्क फोर्स**

वाशिंगटन, 10 मई – नेशनल गे एंड लेस्बियन टास्क फोर्स पॉलिसी इंस्टीट्यूट ने आज एशियाई एवं प्रशांत द्वीपीय (एपीआई) लेस्बियन, समलैंगिक, द्विलिंगी एवं ट्रांसजेंडर अमेरिकियों (एलजीबीटी) पर अब तक के सबसे बड़े राष्ट्रीय सर्वेक्षण से आंकड़ों पर आधारित एक ऐतिहासिक अध्ययन, *हाशिए पर जिंदगीः लेस्बियन, समलैंगिक, द्विलिंगी और ट्रांसजेंडर एशियाई एवं प्रशांत द्वीपीय अमेरिकियों का एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण* जारी किया। इसके चिंतनीय निष्कर्षों में ये सम्मिलित हैः 75 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपनी यौन रुचि के चलते भेदभाव और/या उत्पीड़न का सामना किया और 85 प्रतिशत ने अपनी जाति या नस्ल के आधार पर भेदभाव और/या उत्पीड़न का सामना किया।

"एशियाइयों और प्रशांत द्वीपियों का जीवन जटिल है, और 'आदर्श अल्पसंख्यक' की हमारी समुदाय की लोकप्रिय धारणा ने उन्हें अदृश्य बना दिया है। यह रिपोर्ट उन मिथकों को ध्वस्त करने और महत्वपूर्ण सवाल बुलंद करने में मदद करती है जिनसे एक समुदाय के रूप में हम खुद को गोलबंद कर सकते हैं और ऐसा करने की जरूरत है।" सिएटल, वाश के ट्राइकोइन–नार्थवेस्ट की माला नागराजन ने कहा।

"नेशनल गे एंड लेस्बियन टास्क फोर्स के कार्यकारी निदेशक मैट फोरमैन ने कहा, "जब घृणा हिंसा और उत्पीड़न को समुदाय की सबसे बड़ी चिंता बताया जाए, और एशियाई या प्रशांत द्वीपीय होने या लेस्बियन, समलैंगिक, द्विलिंगी या ट्रांसजेंडर होने के चलते सर्वेक्षण के पांच में से करीब एक उत्तरदाता को शारीरिक उत्पीड़न से गुजरना पड़ा हो, तब यह इस आवश्यकता को रेखांकित करता है कि कांग्रेस संघीय घृणा हिंसा कानून पारित करे और राष्ट्रपति उस पर हस्ताक्षर करें।"

हाशिए पर जिंदगी 863 उत्तरदाताओं के सर्वेक्षण आंकड़ों के विश्लेषण पर आधारित है, जो कुल मिलाकर 38 राज्यों और कोलंबिया जिले में इस तर्ज पर रहते हैं जो अमेरिका में एशियाइयों और प्रशांत द्वीपियों के वितरण को निकट से अभिव्यक्त करता है। यह ऑनलाइन सर्वेक्षण जून से लेकर सितंबर 2006 तक अंग्रेजी, चीनी, कोरियाई और वियतनामी में संचालित किया गया। इसमें बुनियादी जनसांख्यिकीय सूचना, भेदभाव और/या उत्पीड़न के अनुभवों, नीतिगत प्राथमिकताओं और राजनीतिक व्यवहार पर केन्द्रित विविध सवाल पूछे गए। न्यूयार्क, वाशिंगटन, डी.सी., शिकागो, लास एंजिलिस, सान फ्रांसिस्को, सिएटल और होनोलुलू के एपीआई एलजीबीटी समुदाय संगठनों के लिस्टसर्व और वेबसाइट पर आमंत्रण के माध्यम से उत्तरदाताओं की नियुक्ति की गई थी। दक्षिण एशियाइयों, प्रशांत द्वीपियों, कोरियाइयों, महिलाओं, ट्रांसजेंडर लोगों और वृद्धों समेत पारंपरिक रूप से निम्न प्रतिनिधित्व वाले समूहों की भागीदारी बढ़ाने के लिए विशेष अपीलें भी जारी की गईं थी।

एपीआई–इक्विलिटी–लास एंजिलिस की दोरीना वोंग ने कहा, "जैसे–जैसे एशियाई और प्रशांत द्वीपीय आकार और प्रभाव में बढ़ रहे हैं, हम उन एशियाइयों और प्रशांत द्वीपियों को पीछे नहीं रख सकते जो लेस्बियन, समलैंगिक, द्विलिंगी या ट्रांसजेंडर हैं। हम एपीआई और एलजीबीटी दोनों समुदायों के हिस्से हैं और हम समग्र एवं सहानुभूतिशील आप्रवास सुधार, हमारे समुदाय को क्षति पहुंचाने वाली वैवाहिक और घृणा हिंसा पर दंडात्मक प्रतिबंध पर राष्ट्रीय बहसों में शामिल किए जाने के लिए हम अपनी आवाज बुलंद करते हैं। हम स्वयं के संकट पर मूक हैं।"

टास्क फोर्स नीति विश्लेषक और अध्ययन के मुख्य लेखक एलैन डांग ने कहा, "एशियाई और प्रशांत द्वीपीय एलजीबीटी समुदाय सदस्य एपीआई समुदाय में होमोफोबिया के रूप में और एलजीबीटी समुदाय में नस्लवाद के रूप में सर्वव्यापी उत्पीड़न की रिपोर्ट देते हैं। वे व्यापक एवं सहानुभूतिशील आप्रवास सुधार और इस पर चिंतित हैं कि मीडिया में उन्हें कैसे प्रदर्शित किया जाता है और वे अपने परिवार और खुद को हिंसा एवं उत्पीड़न से बचाने पर चिंतित हैं।" उन्होंने कहा, "ये निष्कर्ष उन बढ़ते साक्ष्यों में इजाफा है जो न केवल कानूनी हस्तक्षेप, बल्कि समुदाय के आत्ममंथन की आवश्यकता पर जोर देता है।"

इस रिपोर्ट के प्रमुख निष्कर्षों में निम्नलिखित शामिल हैः

- लगभग हरेक प्रतिभागी (98 प्रतिशत) ने अपने जीवन में कम से कम एक प्रकार के भेदभाव और/या उत्पीड़न का अनुभव किया हैः 75 प्रतिशत ने रिपोर्ट दी है कि उन्होंने अपनी यौन रुचि के चलते भेदभाव और/या उत्पीड़न का सामना किया और 85 प्रतिशत ने अपनी जाति या नस्ल के आधार पर भेदभाव और/या उत्पीड़न का सामना किया।
- एपीआई एलजीबीटी अमेरिकियों के समक्ष सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुद्दे हैं घृणा हिंसा/उत्पीड़न, मीडिया प्रतिनिधित्व, वैवाहिक समता एवं आप्रवास।
- लगभग सभी उत्तरदाताओं (89 प्रतिशत) ने सहमति जताई कि व्यापक एपीआई समुदाय के अंदर होमोफोबिया और/या ट्रांसफोबिया एक समस्या है। इसके अतिरिक्त 78 प्रतिशत ने सहमति जताई कि एपीआई एलजीबीटी के लोग बहुसंख्यक श्वेत एलजीबीटी समुदाय के अंदर नस्लवाद का सामना करते हैं।
- एपीआई एलजीबीटी अमेरिकी राजनीतिक रूप से बहुत सक्रिय हैं। 67 प्रतिशत ने कहा कि वे 2006 के मध्यावधि चुनाव में वोट डालेंगे। तकरीबन 20 प्रतिशत ने बताया कि वे वोट डालने के अयोग्य हैं। अधिकांश उत्तरदाताओं ने भी कहा कि वे याचिकाओं पर हस्ताक्षर करने, मार्चों या रैलियों में हिस्सा लेने और अपने निर्वाचित अधिकारियों से संपर्क करने समेत अन्य राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा लेते हैं।
- केवल 50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि अंग्रेजी उनकी जन्मजात भाषा है। मन्दरिन (11 प्रतिशत), कैंटोनीज (8 प्रतिशत), तगालोग (6 प्रतिशत) और वियतनामी (5 प्रतिशत) ज्यादा बोली जाने वाली जन्मजात भाषाएं हैं। लगभग तमाम एलजीबीटी सूचनात्मक एवं एडवोकेसी सामग्रियां अंग्रेजी में तैयार होती हैं। कुछ ही किसी एशियाई भाषा में प्रकाशित होती है।

उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीः

चीनी (40 प्रतिशत), फिलीपिनो (19 प्रतिशत), जापानी (11 प्रतिशत), और एशियाई भारतीय (10 प्रतिशत) समेत एक दर्जन से ज्यादा जातियों का प्रतिनिधित्व नमूने में हुआ। वियतनामी, कोरियाई, हवाईयाई, मलेशियाई, थाई और पाकिस्तानी उत्तरदाताओं की एक छोटी संख्या ने भी भाग लिया। ये जातीय समूह एशियाई प्रशांत द्वीपी (एपीआई) में

शामिल हैं। एपीआई में अनूठे इतिहासों, संस्कृतियों और अपने एशियाई या प्रशांत द्वीपीय गृह देश से विस्थापन और अमेरिका में निवास के उनके अनुभव के साथ जातीय समूहों की एक विशाल श्रंखला शामिल है।

- उत्तरदाताओं के 53 प्रतिशत ने पुरुष के रूप में, 41 प्रतिशत ने महिला के रूप में और 10 प्रतिशत ट्रांसजेंडर के रूप में खुद को चिह्नित किया। यह जुड़ कर 100 प्रतिशत से ज्यादा हो जाता है क्योंकि उत्तरदाता एक से अधिक विकल्पों का चयन कर सकते थे।
- उत्तरदाताओं के 47 प्रतिशत ने खुद को समलैंगिक के रूप में, 19 प्रतिशत ने लेस्बियन के रूप में और 9 प्रतिशत ने द्विलिंगी के रूप में खुद को चिह्नित किया। 20 प्रतिशत ने "विचित्र" ("queer") के रूप में खुद को चिह्नित किया। इस लेबल को चुनने वाली महिलाओं की संख्या पुरुषों के मुकाबले दुगुनी थी। पांच प्रतिशत ने अन्य विभिन्न लेबल चुना।
- उत्तरदाताओं की एक तिहाई ने बताया कि वह समर्पित संबंध का पालन करते है, और 10 प्रतिशत का घरेलू पार्टनर था।

हाशिए पर जिंदगीः लेस्बियन, समलैंगिक, द्विलिंगी और ट्रांसजेंडर एशियाई एवं प्रशांत द्वीपीय अमेरिकियों का एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण आज लॉस एंजिलिस में एशियन पैसेफिक अमेरिकन लीगल सेंटर में एक संवाददाता सम्मेलन में जारी किया गया।

"यह रिपोर्ट भागीदारी करने वाले और अप्रतिनिधित आवाजों को सुने जाने के लिए प्रेरित करने वाले देश भर के स्थानीय संगठनों के समर्पित प्रयास के बगैर संभव नहीं होती," डांग ने कहा। "*हाशिए पर जिंदगी* जातीय एवं आर्थिक न्याय के प्रति टास्क फोर्स की दीर्घकालिक प्रतिबद्धता को जारी रखती है और साझेदारी में एक मजबूत, जीवंत, विविधतापूर्ण एलजीबीटी समुदाय सृजित करने के स्थानीय कार्यकर्ताओं के प्रयासों का समर्थन करती है जहां सभी का स्वागत और समर्थन किया जाता है।"

रिपोर्ट की एक प्रति एवं संबंधित फैक्टशीट निम्नलिखित से डाउनलोड की जा सकती है
www.theTaskForce.org/reports_and_research/api_study

–30–

द नेशनल गे एंड लेस्बियन टास्क फोर्स का मिशन आधार से लेस्बियन, समलैंगिक, द्विलिंगी और ट्रांसजेंडर (एलजीबीटी) समुदाय की राजनीति शक्ति का निर्माण करना है। हम इसे कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित कर, एलजीबीटी–विरोधी रेफ्रेंडा को परास्त करने के लिए व्यापक आधार के अभियानों का संगठन कर, और एलजीबीटी–समर्थक विधेयक को आगे बढ़ाकर और अपने आंदोलन की संगठनात्क क्षमता का निर्माण कर करते हैं। आंदोलन का मुख्य विचार केन्द्र – हमारा पॉलिसी इंस्टीट्यूट पूर्ण समता के लिए संघर्ष को और दायां पंथी झूठों का सामना करने के लिए समर्थन प्रदान करता है। एक व्यापक सामाजिक न्याय आंदोलन के एक हिस्से के रूप में हम एक ऐसे राष्ट्र के निर्माण के लिए काम करते हैं, जो मानवीय अभिव्यक्ति और पहचान का सम्मान करता हो और सभी के लिए अवसर सृजित करे। इसका मुख्यालय वाशिंगटन, डी.सी. में है और इसके कार्यालय न्यूयार्क सिटी, लॉस एंजिलिस, मियामी, मिन्नेपोलिस और कैंब्रिज में है।